Asst Prof - (Guest)
Deptt of Psychology.
S.R.A.P. College, Bara Chakia -
(A Constituent unit of B.R.A. Bihar University MFD)

Subject - Psychology (Sub)
Topic
Class प्रत्यक्षीकरण और संवेदना में अन्तर
B.A. Part I Subsidiary
Day Tuesday
Date 14/02/2023
Period 3rd
Contact No - 9801466117/6202215708

प्रश्न :- प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा दें? तथा संवेदना से अन्तर स्पष्ट करें?

उत्तर :- प्रत्यक्षीकरण एक सामाजिक एवं जटिल मानसिक क्रिया है। प्रत्यक्षीकरण विश्व की बाहरी वस्तुओं से ही सम्बन्ध होता है। बाहरी वस्तुएँ हमारी ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित करती है। तथा उत्तेजनाओं के फलस्वरूप हमारे मस्तिष्क में संवेदनाएँ उत्पन्न करती है। हमारा मस्तिष्क अपने विगत अनुभव के आधार पर ही किसी संवेदना को अभिष्ट नाम देता है अर्थात उसे पहचानता है। यही वास्तविक प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया है। संवेदनशीलता एक मानसिक प्रक्रिया है। जिसके वस्तु को जानना आवश्यक नहीं होता है। जबकी प्रत्यक्षीकरण भौतिक वस्तु का प्रत्यक्ष या परोक्ष ज्ञान कराने वाली जटिल क्रिया है। जिसके वस्तु के परिचय के साथ ही उसके विषय में ज्ञान भी होता है। हमारा मस्तिष्क संवेदनाओं को ग्रहण करके पर स्पष्ट अर्थ देता है। मस्तिष्क के द्वारा संवेदनाओं का प्रदान किया जाने वाला यह सुनिश्चित अर्थ ही प्रत्यक्षीकरण कहलाता है।

उद्दीपक	उत्तेजनाएँ	ज्ञानेन्द्रियाँ	संवेदनाएँ	प्रत्यक्षीकरण

संवेदना और प्रत्यक्षीकरण में अन्तर

संवेदना और प्रत्यक्षीकरण दोनों ही ज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ हैं। ये दोनों ही प्रक्रियाएँ एक ही Stage में होती हैं। फिर भी इन दोनों प्रक्रियाओं में निम्नलिखित प्रमुख अन्तर हैं, जो इस प्रकार हैं।

1. संवेदना एक सरल मानसिक प्रक्रिया है जबकि प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। संवेदना की अपेक्षा प्रत्यक्षीकरण में अधिक मानसिक क्रियाएँ होती हैं। अतः प्रत्यक्षीकरण में जो विभिन्नता पाई जाती है वह संवेदना में नहीं पाई जाती है।

2. संवेदना के द्वारा व्यक्ति में उत्तेजना की विशेषता को केवल चेतना ही होती है। अर्थ इस मानसिक प्रक्रिया से उत्तेजना की विशेषताओं के आधार पर किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता है जबकि प्रत्यक्षीकरण एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को उत्तेजना के रंग, आकार, भार, अर्थ आदि का ज्ञान होता है।

3. कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि संवेदना प्रत्यक्षीकरण का वह भाग है जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि उत्तेजना का प्रथम अनुभूति संवेदना है। जो उत्तेजना के द्वारा उत्पन्न होने से सम्बन्धित मानसिक प्रक्रिया प्रत्यक्षीकरण है। संवेदना में क्या ही क्रियाएँ आती हैं, स्पष्ट नहीं होता है।

4. कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि संवेदना केवल एक मनोवैज्ञानिक कल्पना मात्र है। जबकी कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों का मत है कि संवेदना का अस्तित्व होता है। दोनों ही मतों के अपने-अपने तर्क हैं। कुछ व्यक्तियों के अनुसार संवेदना की अनुभूति होते ही तुरन्त प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है अतः कुछ व्यक्तियों में संवेदना का अध्ययन इस तरह नहीं हो पाता है।

5. संवेदना के अवस्था में प्राणी में निष्क्रियता पाई जाती है। जबकी कुछ अन्य प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में सक्रियता पाई जाती है। अर्थात् प्रत्यक्षीकरण में संवेदना की अपेक्षा अधिक क्रियाएँ होती हैं।